खजूरी ग्राम पंचायत में शिलान्यास और लोकार्पण समारोह में माननीय अध्यक्ष का भाषण

खजूरी ग्राम पंचायत के इस विकास के शिलान्यास और लोकार्पण समारोह में केशोरायपाटन की यशस्वी विधायिका श्रीमती चंद्रकांता मेघवाल, मंच पर विराजे सभी अतिथिगण, इस ग्राम की सरपंच श्री रेशमा मीणा जी, मेरे सभी गांव के भाइयो और बहनो, मैं आपको प्रणाम करता हूं।

ये विद्यार्थी आँखों में नये सपने लेकर आए हैं। इस आकांक्षी भारत में गाँव के अंदर भी विकास की गति बढ़ रही है। इस विद्यालय को जब मैंने बाहर से देखा तो मुझे लगा कि कोटा में ऐसा निजी विद्यालय भी नहीं हो सकता है, जैसा कि यह सरकारी विद्यालय है। इस सरकारी विद्यालय में पढ़ने वाला किसान का बेटा और मजदूर का बेटा यहां पर बहुत अपेक्षा लेकर बैठा है। उसके मन में बहुत आकांक्षा है कि मैं गाँव में तो पढ़ता हूँ, लेकिन गाँव में पढ़ने के बाद भी मैं देश और दुनिया की पढ़ाई भी गाँव में बैठकर कर सकूं, तो वह सपना भी पूरा होना चाहिए। इस सपने को हम पूरा करेंगे। यहां पर एक बढ़िया स्मार्ट क्लास बनाएंगे। उस स्मार्ट क्लास के माध्यम से गाँव में बैठकर बच्चा कोटा में कोचिंग पढ़ाने वालों से शिक्षा प्राप्त कर सकेगा। वह देश और दुनिया में बढ़िया ऑनलाइन शिक्षा देने वालों से शिक्षा प्राप्त कर सकेगा। उसके मन में अभी से स्कील डेवलपमेंट की सोच होनी चाहिए कि मुझे किस क्षेत्र में काम करना है या किस क्षेत्र में आगे बढ़ना है। बाल्यकाल से ही उसके मन में सपने होने चाहिए कि मेरे माता-पिता ने जो सपने देखे हैं, उस सपने को इस गाँव और ढाणी में पूरा करूंगा। यह लक्ष्य हमारा होना चाहिए। मैं यहां बैठकर अपने बेटे-बेटियों को देख रहा हूं। उनमें उत्साह, चमक और आत्मविश्वास है।

ये बदलते भारत की तस्वीर को देखना चाहते हैं। इस बदलते भारत के अंदर हमारा नौजवान जो युवा और सामर्थ्य है, जिसमें इनोवेशन करने की नई क्षमता है और अपने जीवन में कुछ अद्भूत करने का आत्मविश्वास है, उसको हमारे सहयोग से बच्चे पूरा करें। जब मैंने स्कूल को देखा तो मुझे लगा कि बिना बाउंड्री वाल के दिक्कत आएगी। मेरा सबसे पहला प्रश्न था कि बाउंड्री वाल का काम शुरू होगा या नहीं? मुझे बताया गया कि बाउंड्री वाल के लिए 15 लाख रुपये स्वीकृत हो चुके हैं। बहुत जल्दी इस विद्यालय की बाउंड्री वाल भी बन जाएगी। जब बाउंड्री वाल बन जाएगी तो हमारे बच्चे सुरक्षित रहेंगे।

इसी तरीके से गाँव के अंदर जो आधारभूत ढांचा है, एक-एक पंचायत में तीन-तीन करोड़ रुपये के काम हुए हैं। आप यह नये भारत की तस्वीर देख रहे हैं। एक समय था, जब गाँव में तीन लाख या पाँच लाख रुपये लग जाते थे, तो बहुत बड़ी बात होती थी कि उस गाँव में पांच लाख रुपये लग गए। पहले जब सामुदायिक भवन बनाने के लिए मेरे पास पैसे मांगने आते थे तो वे पाँच लाख या दस लाख रुपये मांगते थे। दस लाख रुपये से बड़ी सीमा नहीं होती थी। अब सामुदायिक भवन बनेगा तो बीस लाख रुपये का सामुदायिक भवन बनेगा।

हम चाहते हैं कि गाँव के आधारभूत ढांचे का विकास हो। लोगों की जो मूलभूत सुविधाएं हैं, जो मूलभूत सुविधा से वंचित हैं, उनको मूलभूत सुविधा गाँव के अंदर मिले। मुझे पता है कि इस गाँव के अंदर पिछली बार बिजली विभाग के द्वारा पक्षपात किया जाता था। मैंने उनसे कह दिया है कि इस इलाके में एक नया 132 जीएसएस का सेंटर बनना चाहिए। मैं राज्य सरकार से कहा है कि आप प्रस्ताव बनाकर भेज दीजिए, दिल्ली से उसको स्वीकृत कराने की जिम्मेदारी मेरी है। जब भी इस इलाके के अंदर पानी नहीं पहुंचे तो बिना ट्रिपिंग के लोगों को बिजली मिले, ताकि यहां का किसान आत्मनिर्भर हो सके।जब पिछली बार हमने कोटा में किसान मेला लगाया था, लोगों से आग्रह किया था कि हमें नई तकनीक की खेती करनी चाहिए। अभी कुछ दिन पहले जो लोग मेले में आए थे, वे दिल्ली आकर मुझसे मिले थे।

मैंने कहा कि आप इलाके में जाकर देखो, किस इलाके की जमीन-पानी, हम किस तरह से नई खेती कर सकते हैं, जो किसान सपना देख रहा है कि मेरी आमदनी दोगुनी हो, उसको पूरा करने का प्रयास करिए। मेरे गांव का किसान आपका सहयोग करेगा। पहले गांव में कुछ लोग करेंगे, तो एक न एक दिन तो परिवर्तन होएगा। एक गांव के अंदर दो लोग करेंगे, वे देखेंगे कि इनकम ठीक हो गई है, तो हमें भी लगाना चाहिए। ऐसे एक-एक गांव में जब एक्सपेरीमेंट करेंगे, तो उसको देखकर दूसरे लोग भी करेंगे। मुझे पता है कि मैं एक या दो साल में परिवर्तन नहीं कर सकता हूं, लेकिन मुझे परिवर्तन करने का तो प्रयास करना पड़ेगा। मैं कब तक हमारे किसानों को ऐसे ही देखता रहूंगा। अगर ओला वृष्टि हो जाए, तो फसल नष्ट, शीतलहर आ जाए, तो फसल नष्ट, अकाल पड़ जाए, तो फसल नष्ट। जब तक किसान आत्मनिर्भर नहीं होगा, हम बदलते भारत की तस्वीर को नहीं देख सकते हैं। किसी गांव या कस्बे का व्यापारी तब पैसा कमाता है, जब किसान की आमदनी ठीक होती है। सेठ जी, इस बार फसल ठीक हुई

है, तो इनकम भी ठीक होगी। अगर फसल अच्छी नहीं होती है, तो बाजार बंद हो जाता है, लोगों की खरीदने की क्षमता कम हो जाती है। इसलिए मेरा जोर है कि किसान की आमदनी बढ़े।

मुझे याद है कि यह एक लंबा सफर है, मुश्किल और कठोर सफर है। 100-150 सालों में बदलाव नहीं हुआ है, उसको बदलाव का सपना देखना है, यह अजीब सी चीज है। मैंने भी फैसला किया है कि मैं बदलाव लाऊंगा। आज नहीं, पांच सालों के बाद इस इलाके के किसानों की हालत देश के अन्य किसानों को बताऊंगा कि देखिए, हमने कैसे बदलाव किया है। मैं जब दिल्ली में होता हूं, तो मेरा एक घंटे का समय किसान और खेती के जो भी विशेषज्ञ आते हैं, उनके साथ चर्चा करते हुए बीतता है।

मेरे एक मेंबर ऑफ पार्लियामेंट थे, उन्होंने कहा कि ये घास उगा दो, तो मेरी गारंटी है कि मैं 50,000 रुपये बीघा की इनकम दूंगा। मैंने कहा ठीक है। आप 10 खेतों में करिए। मिनिमम 10,000 रुपये उसको दे दो, अगर खराब हो जाए, तो कम से कम 10,000 रुपये मिल जाएंगे। अगर वह चाहेगा, तो उगा लेगा। अब धीरे-धीरे एग्रीकल्चर के साथ वैल्यू एडीशन गांवों में करना पड़ेगा। हम जिस मोटे अनाज की बात कर रहे हैं, उसकी चीजें बनना शुरू हो जाएं। ऐसे बहुत सारे बदलाव करने की आवश्यकता है। आप मानिए, आपने मुझे बड़े विश्वास और भरोसे के साथ भेजा है। मेरा आपके बीच में आना-जाना कम हो, वह एक अलग बात है, क्योंकि आपने मुझे और भी जिम्मेदारियां दी हैं।

देश का लोकतंत्र मजबूत हो, लोकतांत्रिक संस्थाओं में जो लोग अपनी बात कहते हैं, उनकी बातें पूरी हों, आपने मुझे ये जिम्मेदारी दी है। देश भर के संसद सदस्य वहां पर अपनी बात रखते हैं, उन बातों को पूरा करने की जिम्मेदारी मेरी है। इसलिए समय कम मिलता है, लेकिन जितना समय मिलता है, मैं वह सारा समय में कोटा-बूंदी के लोगों के लिए बिताता हूं। नई-नई चीजें करने की कोशिश करता हूं। आज नहीं तो कल परिवर्तन हो सके, ऐसी कोशिश करता हूं। इसलिए आप निश्चिंत रहिए, छोटी-मोटी समस्याएं तो विधायक जी देख लेंगे। मुझे बड़े काम करने दीजिए। अगर मैं छोटे कामों में उलझ जाऊंगा, तो मैं लोगों का जीवन नहीं बदल पाऊंगा। बड़े काम करना है, ताकि बड़ा बदलाव आए। अगर जरूरत होती है, तो छोटे काम भी करता हूं। मैंने सरपंच साहब से पूछा कि क्या कोई कमी है, तो कहा कि कोई कमी नहीं है।

अगर कमी होगी तो उसे अगली बार पूरा करेंगे। अब चार दीवारी बन गई है तो चार दिवारी का सिंह द्वार भी बनना चाहिए। बाकी सारे विषय मैं एमएलए साहब को दे देता है। बच्चों के शौचालय के लिए एमएलए साहब तीन लाख रुपये दे देंगे और शौचालय बनवा देंगे। महिलाओं के शौचालय में कोई कमी नहीं है। इनके लिए भी शौचालय बनवा दिए जाएंगे। इसमें कोई दिक्कत नहीं है। आप शौचालय का काम शुरू करवा देना। महिला शौचालय के लिए पैसों की कमी नहीं आएगी। विधायक महोदय, सरपंच साहब और जिला परिषद मिलकर सब कर लेंगे। मैंने दिल्ली में माडा के 80 लाख रुपये यहां पर स्वीकृत करवा दिए हैं, जिसका काम जल्दी शुरू हो जाएगा।

मेरी तरफ से, मैं यहां पर स्मार्ट क्लास शुरू करवा दूंगा, जिससे बच्चों को अच्छी शिक्षा मिल सके। इसके लिए जितना भी खर्चा आएगा, उसका खर्चा हम दे देंगे। आप स्मार्ट क्लास की तैयारी करवा दीजिए और हमें ऐस्टिमेट दे दीजिएगा। हम उतना बना देंगे। इसी के साथ आप सभी को धन्यवाद। आपका ऐसे ही प्यार रहे, आशीर्वाद रहे और स्नेह रहे। सब स्वस्थ रहें। हमें शिक्षा, स्वास्थ्य और आमदनी पर काम करना है। इसलिए मोबाइल वैन चलती रहती है और गांव-गांव में घूमती रहती है। हर गांव में जाकर हर व्यक्ति को देखती है, अगर कोई कमी होती है तो बेहतर इलाज करवाने का काम करती है। अच्छी शिक्षा, अच्छा स्वास्थ्य और आमदनी, ये तीन विषय हमारे एजेंडे के हैं, इन एजेंडों पर हमें पांच साल काम करना है। पांच साल बाद जब आपके बीच में आएंगे तो एक बदलाव की ताकत लेकर आएंगे। कुछ नया करके जाएंगे।